फिरोजशाह तुगलक (1351-1388)

- ↳ सल्तनत युग का अकबर (हेनरी इलियट)
- राज्य का अपहरणकर्ता (वूल्जलेहेग)
- दिल्ली का आदर्श सुल्तान (बरनी)

राज्याभिषेक 2 बार
1→ थट्टा - मार्च 1351
दिल्ली - अगस्त 1351

अभियान-

1- बंगाल अभियान → हाजी इलियास शासक था
↳ घेरा डाला किन्तु बाद में हटा लिया (बारा नस जा रहा रहा है परन्तु इसको लगता है कि वह दिल्ली पर आक्रमण करेगा)
IInd → अभियान के दौरान जौनपुर की स्थापना की
2- जाजनगर अभियान - 1360 → पुरी के जगन्नाथ मंदिर को तोड़ा (→ असफल)
3- थट्टा अभियान → जाम्बवीन शासक था। अंत (1365-67) अधीनता स्वीकार की

→ कार्य-
→ कृषि ऋण माफ कर दिया (2 करोड़ टंका, तकावी)
→ गंभीर दण्डों का अंत कर दिया
→ 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल 4 स्वीकृत किया
1- जजिया - गैर मुस्लिमों से लिया जाना वाला कर था, ब्राह्मणों पर भी लगाया
2. जकात - मुस्लिमों की सम्पत्ति पर लिया जानेवाला कर 2.5% था।
3- खिराज - भूमिकर था उपज का 1/3 भाग
4- खुम्स - लूट का कर 1/5 लूटनेवाले का,

हक-ए-सर्ब - सिंचाई कर था
↳ उपज का 10%

→ आववाब कृषि कर को समाप्त किया
→ जागीरदारी प्रथा पुनः शुरू की तथा सैनिकों का पद वंशानुगत कर दिया।
→ खुत्बे में दिल्ली के पूर्व सुल्तानों का उल्लेख किया केवल कुतुबुद्दीन ऐबक शामिल नहीं।

दीवान-ए-बंदगान (दास विभाग) की स्थापना की
↳ 150000 दास थे (निर्यात पर प्रतिबन्ध)
→ दीवान-ए-इस्तेहाक (पेंशन विभाग) की स्थापना की
→ दीवान-ए-खैरात - (दान विभाग) की स्थापना की
दारुलसफा (खैराती अस्पताल था)

नए नगरों की स्थापना - फतेहाबाद, फिरोजाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर, हिसार,

→ नहरों का जाल बनाया
→ बागों का शौकीन (1200 बाग लगवाये)
→ अशोक के दो स्तम्भ टोपरा (अम्बाला) तथा मेरठ को दिल्ली में स्थापित किया।
→ शरियत और उलेमा वर्ग को राज्य के प्रशासन में प्रधानता दी।
→ दो बार खलीफा से स्वीकृति ली (सुल्तान की उपाधि)
→ मजारों पर जाने से महिलाओं पर प्रतिबन्ध (दिल्ली से बाहर)
→ शशगनी चांदी का सिक्का चलवाया
(अद्धा) अद्धा (1/2) तथा बिख (1/4)
चांदी व तांबे के चलवाया।
तास घड़ियाल (जलघड़ी)

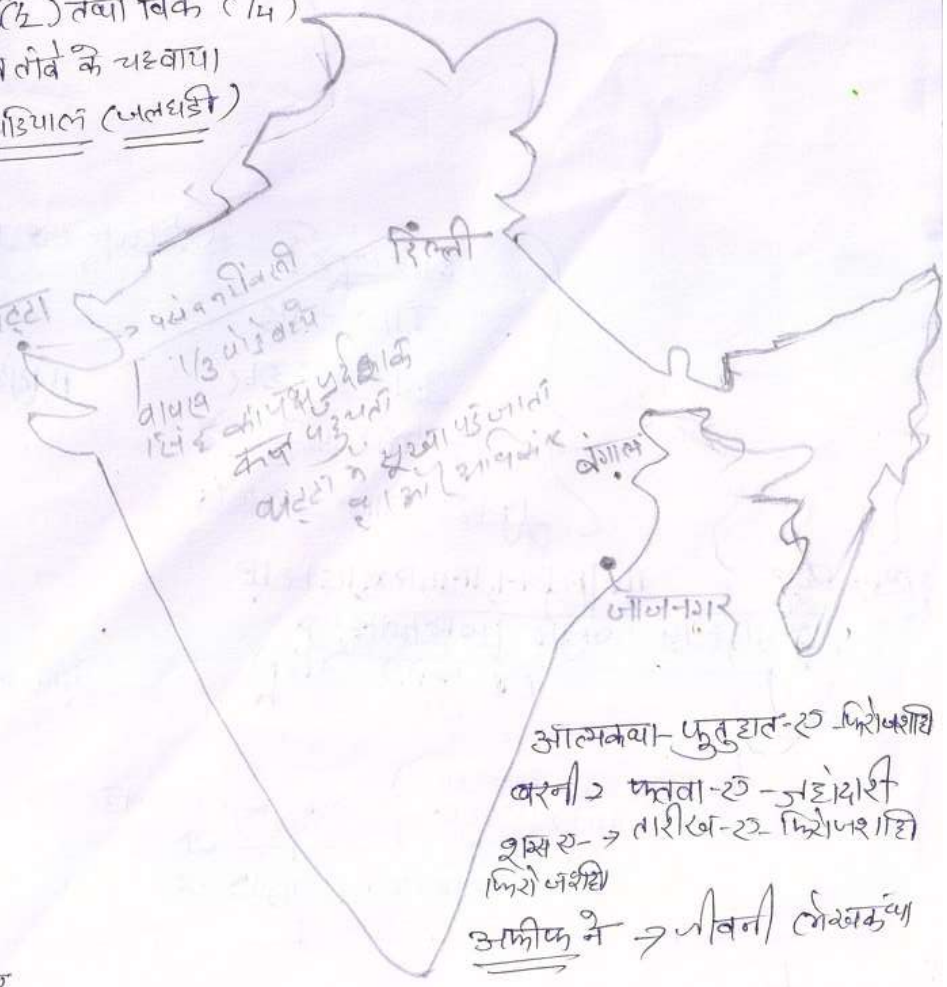

आत्मकथा - फुतुहात-ए-फिरोजशाही
बरनी → फतवा-ए-जहांदारी
शम्स-ए- → तारीख-ए-फिरोजशाही
सिराज अफीफ
अफीफ ने → जीवनी लेखक था

गयासुद्दीन तुगलक

↳ वास्तविक नाम गाजी मलिक
↳ उपाधि गाजी → काफिरों के लिए घातक

" अलाउद्दीन की कृपा के कारण मैंने यह पद प्राप्त किया है जहाँ तुम देख रहे हो "

समस्याएं -

- → सत्ता का एकीकरण
- → सुल्तान की गरिमा की पुनः स्थापना
- → आर्थिक स्थिति से कमजोर साम्राज्य

सैन्य अभियान

1- तेलंगाना अभियान - पुत्र जूना खाँ को भेजा
(वारंगल) शासक → राजरूद्र प्रताप देव पराजित
↳ तेलंगाना का नाम सुल्तानपुर रखा गया।

2- जाजनगर अभियान → शासक भानुदेव - II
(उड़ीसा) ↳ राजमुंदरी अभिलेख से विजय की पुष्टि ↓

जूना खां - " दुनिया का खान

बंगाल अभियान -

गयासुद्दीन बहादुर vs नासिरुद्दीन
पराजित — तुगलक से सहायता मांगी
शासक → नासिरुद्दीन बनाया गया।

तिरहुत आक्रमण - (1324-25)
↓ ↳ शासक - हरिसिंह देव भाग गया
शासक - अहमद खाँ को बनाया गया।

↓
अफगानपुर (दिल्ली के पास) लकड़ी के महल के गिरने से मृत्यु हो गयी
निर्माणकर्ता - अहमद याज

इब्नबतूता → जिम्मेदार MBT
बरनी - बिजली गिरना।

महत्वपूर्ण कार्य →

1- सर्वप्रथम नहरों का निर्माण करवाया
2- अंक प्रणाली को व्यवस्थित किया
3- सरकारी धन को वापस लिया
4- लगान वसूल की मध्यममार्गी नीति - रस्मे मियान
5- निर्धनों की सहायतार्थ आयोजन (विवाह व्यवस्था)
6- तुगलकाबाद शहर की स्थापना की
↳ मकबरा की स्थित है जो पंचभुजीय है।
7- ठेकेदारी प्रथा बंद किया।

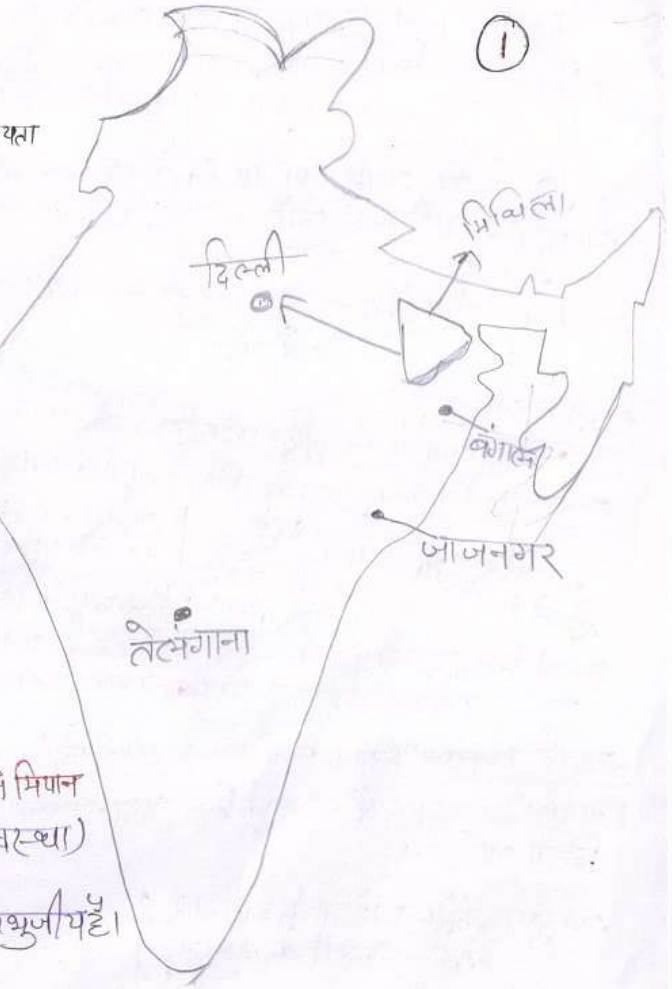

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351)

→ मूल नाम - मलिक फखरुद्दीन / जूना खाँ
उपनाम - रक्त पिपासु / परोपकारी
अंतर्विरोधों का विस्मयकारी
→ उपाधि - उमीर उल मोमनीन (स्वयं खलीफा)

जानकारी → तारीख-ए-फिरोजशाही (जियाउद्दीन बरनी)
→ इब्नबतूता का यात्रा वृतान्त

1325 में गद्दी पर बैठा → 40 दिन तुगलकाबाद में रहा
दिल्ली पहुँचा

प्रमुख कार्य →
1→ दोआब में कर वृद्धि (1325 ई०) > अकाल पड़ गया
2 - राजधानी परिवर्तन (1326-27) दिल्ली से दौलताबाद
दक्षिण पर नियंत्रण रखने के उद्देश्य से
मावर में विद्रोह एवं प्लेग 1335 में पुनः राजधानी दौलताबाद से दिल्ली
कुतबुल इस्लाम (नाम परिवर्तन)
3 - सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन → चाँदी के सिक्के के स्थान पर कांसे (1328-30) का सिक्का चलाया [योजना असफल]

एडवर्ड थामस > "सिक्का निर्माताओं का राजकुमार / राजकुमार"
में चीन के कुबलई खाँ ने सांकेतिक मुद्रा सफलतापूर्वक प्रयोग किया था

समतुल्य - कांसा - फरिश्ता के अनुसार
तांबा - बरनी के अनुसार

दीनार - सोने का
अदली - चाँदी का सिक्का

[तमिलनाडु क्षेत्र में प्लेग फैल जाता है और वह खुद भी बीमार पड़ जाता है और पुनः वापस दिल्ली जाने की आज्ञा दी]

खुरासान एवं कराचिल अभियान (1330-31)
खुरासान (मध्य एशिया का द्वार अफगानिस्तान)
तरमाशीरीन एवं तुगलक (मित्र)
मध्य एशिया विजय का प्लान
↓
अपदस्थ एवं ईरान एवं मिस्र में संधि MBT की योजना
कराचिल अभियान → भौगोलिक चुनौतियों की वजह से असफल

अन्य तथ्य
→ हि-दुओं के त्योहार होली में भाग लेता था।
→ मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह एवं सिपहसालार गाजी की दरगाह पर जाता था। (बहराइच)
→ दीवान-ए-अमीरकोही (कृषि विभाग) की स्थापना की
→ सर्वाधिक विशाल साम्राज्य MBT का ही थी कुल 23 प्रान्त थे।

सर्वाधिक विद्रोह भी इसी के काल में हुए कुल 34 विद्रोह
→ पहला शासक जिसने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए शिविर खोले।
के विद्रोह को दबाने के लिए जाते समय थट्टा में मृत्यु हो गयी
कृषि में शस्यवर्तन प्रणाली लागू किया।

(ईरान और मिस्र के बीच संधि)
→ राजनीतिक शून्य है!
(3 लाख सैनिक साथ कूच)

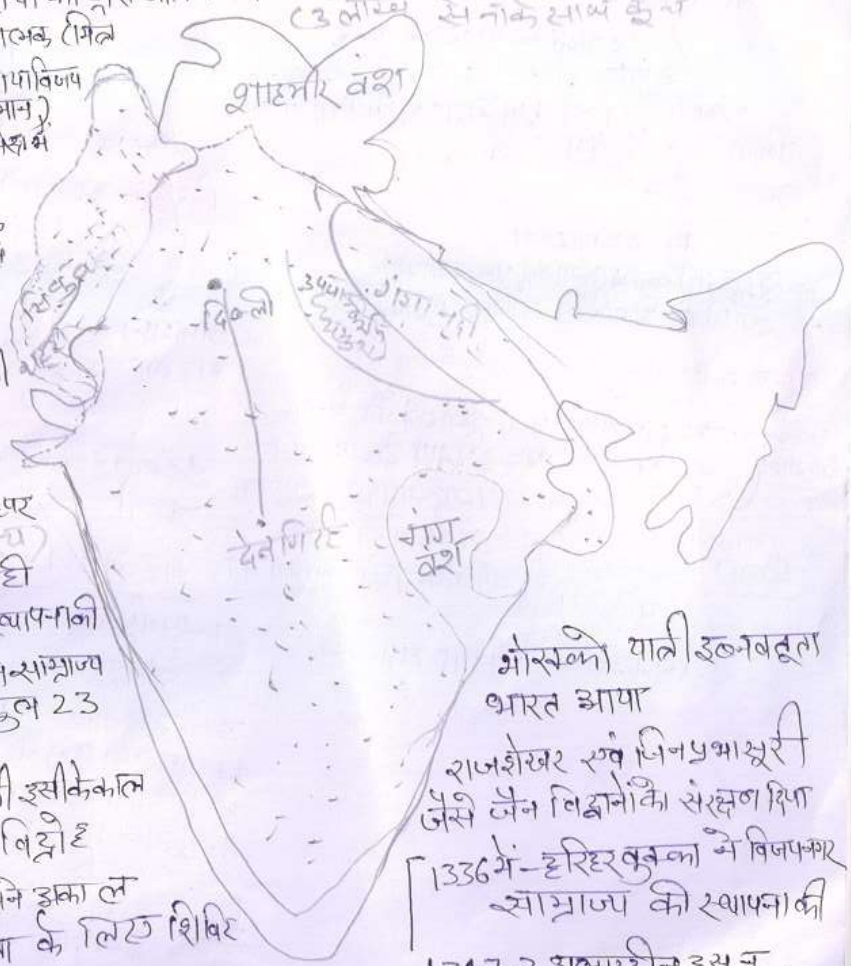

मोरक्को यात्री इब्नबतूता भारत आया
राजशेखर एवं जिनप्रभासूरी जैसे जैन विद्वानों को संरक्षण दिया
[1336 में - हरिहर बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की
1347 → अलाउद्दीन हसन बहमन शाह ने बहमनी राज्य की स्थापना।

ज्वर से इसकी मृत्यु
बदायूँनी कहता है > राजा को प्रजा से और प्रजा को राजा से मुक्ति मिल गयी

फिरोजशाह तुगलक

- फतेह खाँ
  - 1 → ग्यासुद्दीन तुगलक शाह II nd
- जफर खाँ
  - 1 → अबुबक्र
- 3. नासिरुद्दीन मु० शाह
  - अलाउद्दीन सिकन्दरशाह
  - 5. नासिरुद्दीन महमूद (महमूदशाह - I से)

नासिरुद्दीन महमूद

(कथन - "सुल्तान की सत्ता दिल्ली से पालमपुर तक फैली है।")

→ मलिक सर्वर / ख्वाजाजहाँ को मलिक उस सर्क (पूर्व का स्वामी) की उपाधि

→ जौनपुर का प्रमुख बनाया

→ शर्की वंश की स्थापना की

1398 में तैमूर का आक्रमण हुआ

→ (मल्लू इकबाल एवं नासिरुद्दीन पराजित)

तैमूर ने खिज्र खाँ को - मुल्तान, दीपालपुर, लाहौर की सूबेदारी दी

नासिरुद्दीन ने सत्ता → दौलत खाँ लोदी

(→ खिज्र खाँ ने पराजित कर सौंप दी)

तैमूर (तुर्क था)

→ (भाग्यशाली भविष्य का स्वामी) → कहा जाता है

ट्रांसऑक्सियाना निवासी था

- मुबारक शाह शर्की
- इब्राहिम शासक
- महमूद शाह
- मो० शाह
- हुसैन शाह

तुगलक वंश (1320-1413)

गयासुद्दीन तुगलक (1320-25) →

गाजी मलिक, या तुगलक गाजी गयासुद्दीन तुगलक के नाम से 8 सितम्बर 1320 को दिल्ली की गद्दी पर बैठा इसे तुगलक वंश का संस्थापक भी माना जाता है। इसने करीब उनतीस बार मंगोल आक्रमणों को विफल किया।

गयासुद्दीन तुगलक का जन्म साधारण परिवार में हुआ था, किन्तु अपनी योग्यता एवं पराक्रम से वह उन्नति करते हुए दीपालपुर का सूबेदार बन गया। सूबेदार बनने के पश्चात भी उसकी महत्वाकांक्षा का अन्त नहीं हुआ तथा जब खुसरो ने मुबारकशाह की हत्या करके स्वयं दिल्ली का सुल्तान घोषित किया तो गयासुद्दीन ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा शक्तिशाली सेना के साथ दिल्ली के लिए प्रस्थान किया तथा खुसरो की हत्या कर स्वयं दिल्ली का सुल्तान बन गया।

बेनपूल के अनुसार "वह एक विश्वसनीय सीमारक्षक, न्यायप्रिय, उच्चाशय तथा शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ।

प्रारम्भिक समस्याएं → गयासुद्दीन तुगलक शाह को अपने शासन के प्रारम्भ में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। केन्द्र में सत्ता के कमजोर हो जाने के कारण अनेक सूबेदार विद्रोह करने की तैयारी कर रहे थे। कुछ सूबेदार अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर चुके थे। उसके राज्य में चारों ओर अव्यवस्था फैली हुई थी।

गृहनीति (Home Policy)

सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था में अमीरों का विशेष महत्व था। गयासुद्दीन ने सर्वप्रथम अमीरों को प्रसन्न किया। खुसरो के समर्थक अमीरों के विरुद्ध इसने कोई कार्यवाही नहीं की तथा उन्हें पदों पर बने रहने दिया, किन्तु विद्रोह कर रहे सूबेदारों का इसने कठोरतापूर्वक दमन किया। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भी इसने उचित कदम उठाये।

राजकोष को भरना :- खुसरो ने राजकोष खाली कर दिया था। उसने अनेक लोगों की जागीरें तथा उपहार दिये थे। गयासुद्दीन ने राजकोष को भरने के लिए ऐसे लोगों की सूची बनवाई व उनसे जागीरें वापस ले ली गयीं।

राजस्व व्यवस्था में सुधार:- राजकोष को भरने के पश्चात गयासुद्दीन ने राजस्व व्यवस्था की ओर ध्यान दिया तथा अनेक सुधार किये। अलाउद्दीन के द्वारा लागू की गयी भूमि नापने की व्यवस्था समाप्त कर दिया गया तथा पुरानी व्यवस्था को पुनः लागू किया। किसानों को ऋण देने की व्यवस्था की लागू की गयी। प्राकृतिक विपत्ति के समय लगान माफ करने की भी व्यवस्था की गयी। सिंचाई की भी उचित व्यवस्था की गयी। इस प्रकार किसानों का समर्थन व विश्वास प्राप्त करने में वह सफल रहा।

यातायात के साधनों में सुधार:- गयासुद्दीन तुगलक ने यातायात के साधनों में सुधार किये। अनेक नवीन सड़कों का निर्माण कराया गया तथा पुरानी सड़कों को साफ कराया गया। उनकी मरम्मत का कार्य भी उसने कराया। डाक व्यवस्था में भी उसने आवश्यक सुधार किये।

सेना, पुलिस व न्याय व्यवस्था में सुधार:->

गयासुद्दीन ने सेना में व्याप्त अनुशासनहीनता को दूर करने का भी प्रयत्न किया। वह स्वयं सेना का निरीक्षण करता था। योग्य एवं पराक्रमी सैनिकों को वह नियुक्त करता था। पुलिस व्यवस्था की भी उसने पुनर्संगठन किया। बरनी ने लिखा है कि पुलिस व्यवस्था के संगठित होने के कारण मार्ग सुरक्षित हो गये तथा लुटेरे कृषि कार्य करने पर विवश हुए। न्याय व्यवस्था में भी सुधार करते हुए उसने पुराने नियमों व कुरान के आधार पर नया न्याय विधान तैयार करवाया व उसे कठोरता से लागू किया।

सैनिकनीति (Martial Policy) :→ गयासुद्दीन एक योग्य प्रशासक ही नहीं वरन् कुशल सेनानायक भी था। उसने अपने अल्प शासनकाल में अनेक युद्ध लड़े।

(1) बारंगल पर अधिकार :→ दिल्ली में व्याप्त अराजकता से लाभ उठाकर बारंगल ~~अभियान~~ के राजा प्रताप रुद्रदेव ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। अतः गयासुद्दीन ने 1321 ई० में अपने पुत्र जूनाखां के नेतृत्व में एक सेना बारंगल पर आक्रमण करने के लिए भेजी, किन्तु यह अभियान असफल रहा। पुनः 1323 ई० में गयासुद्दीन ने पुनः जूनाखां को आक्रमण करने के लिए भेजा। इस बार जूनाखां सफल रहा तथा राजा प्रताप रुद्रदेव को बन्दी बनाकर दिल्ली भिजवा दिया। बारंगल पर जूनाखां का अधिकार हो गया व उसका नाम बदलकर 'सुल्तानपुर' रखा गया।

उड़ीसा पर आक्रमण :→ बारंगल से लौटते हुए जूनाखां ने उड़ीसा पर आक्रमण किया। इस आक्रमण से उसे अपार धन की प्राप्ति हुई।

मंगोलों पर विजय → 1324 ई० में मंगोलों ने एक बार फिर भारत पर आक्रमण किया। इस समय जूनाखां बारंगल अभियान पर गया हुआ था। अतः गयासुद्दीन ने एक शक्तिशाली सेना मंगोलों का सामना करने के लिए भेजी, जिसने मंगोलों को परास्त कर उन्हें भारत की सीमा से बाहर खदेड़ दिया।

बंगाल में विद्रोह का दमन → बारंगल के समान ही बंगाल ने भी अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। बंगाल का राजा बनने के लिए तीन भाइयों में संघर्ष चल रहा था। अन्त में, बंगाल पर इन भाइयों में से एक गयासुद्दीन का अधिकार हो गया। उसके छोटे भाई नासिरुद्दीन ने सुल्तान से सहायता मांगी। सुल्तान ने उसकी सहायता करने व बंगाल की राजधानी लखनौती पर आक्रमण करने के लिए जफरखां के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना भेजी। जफरखां ने बंगाल पर अधिकार किया व नासिरुद्दीन को वहाँ का शासक नियुक्त किया।

मृत्यु → बंगाल के अभियान से लौटते समय तुगलकाबाद (गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित) से आठ किलोमीटर की दूर पर स्थित अफगान पुर में इसके लड़के जूना खाँ द्वारा निर्मित लकड़ी के महल में सुल्तान के प्रवेश करते ही महल गिर गया जिसमें दबकर गयासुद्दीन मार्च 1325 को मृत्यु को प्राप्त हो गया।

गयासुद्दीन तु० की मृत्यु के विषय में विद्वानों में मतभेद है। डॉ. ईश्वरी प्रसाद, हेग, मजूमदार आदि अनेक विद्वान जूनाखाँ को इसकी मृत्यु के लिए उत्तरदायी मानते हैं, जबकि डॉ. बी. पी. सक्सेना व डॉ. मेंहदी हसन जूनाखाँ को निर्दोष मानते हैं।

मुहम्मद बिन तुगलक

गयासुद्दीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जूना खां 'मुहम्मद तुगलक' के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। मु० तुगलक सभी सुल्तानों में सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था। अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण इन्हें स्वप्नशील पागल एवं रक्त-पिपासु कहा गया। बरनी, सरहिंदी, निजामुद्दीन, बदायूँनी एवं फरिश्ता जैसे इतिहासकारों ने सुल्तानों को अधर्मी घोषित किया।

सिंहासन पर बैठने के बाद तुगलक ने अमीरों एवं सरदारों को विभिन्न उपाधियाँ एवं पद प्रदान किया। इसने तातार खाँ को बहराम खाँ उपाधि, मलिक कबूल को इमाद-उल-मुल्क की उपाधि एवं वजीर-ए-मुमालिक का पद दिया था पर कालान्तर में उसे खानजहाँ की उपाधि के साथ गुजरात का हाकिम बनाया गया। मलिक अयाज को ख्वाजा जहान की उपाधि के साथ 'शहना-ए-इमारत' का पद मौलाना गयासुद्दीन को (सुल्तान का अध्यापक) कुतलुग खाँ को उपाधि के साथ वकील-ए-दर की पदवी, अपने चचेरे भाई फिरोज तुगलक को नायब बारबक का पद प्रदान किया।

मु० तुगलक के सिंहासन पर बैठते समय दिल्ली सल्तनत कुल 23 प्रान्तों में बंटा था जो इस प्रकार थे - दिल्ली, देवगिरि लाहौर, मुल्तान, सरसुती, गुजरात, अवध, कन्नौज, लखनौती, बिहार मालवा, जाजनगर (उड़ीसा) द्वार समुद्र आदि। कश्मीर एवं बलूचिस्तान दिल्ली सल्तनत में शामिल नहीं थे। राज्यारोहण के बाद मु० तुगलक ने कुछ नवीन योजनाओं का निर्माण कर उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया। जैसे -(1) दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326-27), (2) राजधानी परिवर्तन (1326-27), (3) सांकेतिक मुद्रा प्रचलन (1329-30) (4) खुरासान एवं कराजिल का अभियान।

(1) दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326-27) :-> मु० तुगलक ने दोआब के उपजाऊ प्रदेश में कर की मात्रा में वृद्धि कर दी (सम्भवतः 50%) परन्तु उसी वर्ष दोआब में भयंकर अकाल पड़ गया जिससे पैदावार प्रभावित हुई। तुगलक के अधिकारियों द्वारा जबरन कर वसूलने से उस क्षेत्र में विद्रोह हो गया जिससे तुगलक की यह योजना असफल रही। मु० तुगलक ने कृषि के विकास के लिए 'अमीर-ए-कोही' नाम के एक नवीन विभाग की स्थापना की।

राजधानी परिवर्तन (1326-27) मु० तुगलक ने राजधानी को दिल्ली से देवगिरि को स्थानान्तरित किया सुल्तान की इस योजना के लिए सर्वाधिक आलोचना की गई, इसने अपनी नई राजधानी का नाम दौलताबाद रखा जबकि इसके पहले कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने देवगिरि का नाम 'कुतबाबाद' रखा था। मु० तुगलक द्वारा राजधानी परिवर्तन के कारणों पर इतिहासकारों में बड़ा विवाद है फिर भी निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि देवगिरि का दिल्ली सल्तनत के मध्य स्थित होना, मंगोल आक्रमणकारियों के भय से सुरक्षित रहना, दक्षिण-भारत की सम्पन्नता की ओर खिंचाव आदि ऐसे कारण थे जिनके कारण सुल्तान ने राजधानी परिवर्तन करने की बात सोची। मु० तुगलक की यह योजना भी पूर्णतः असफल रही और उसने 1335 में दौलताबाद से लोगों को दिल्ली वापस होने की अनुमति दे दी।

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन :- मुहम्मद तुगलक ने सांकेतिक या प्रतीकात्मक सिक्कों का प्रचलन करवाया। बरनी के अनुसार सम्भवतः सुल्तान ने राजकोष की रिक्तता के कारण एवं अपनी साम्राज्य विस्तार की नीति को सफल बनाने हेतु सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन करवाया। सांकेतिक मुद्रा के अन्तर्गत सुल्तान ने संभवतः पीतल (फरिश्ता के अनुसार) तांबा (बरनी के अनुसार) धातुओं के सिक्के चलाये जिसका मूल्य चांदी के रुपये टंका के बराबर होता था। सुल्तान को अपनी इस योजना की असफलता पर भयानक आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा।

खुरासान एवं कराचिल का अभियान :- खुरासान को जीतने के लिए मुहम्मद तुगलक ने 3,70,000 सैनिकों की विशाल सेना को एक वर्ष का अग्रिम वेतन दे दिया, परन्तु राजनैतिक परिवर्तन के कारण दोनों देशों के मध्य समझौता हो गया, जिससे सुल्तान की यह योजना असफल रही और उसे आर्थिक रूप से हानि उठानी पड़ी। कराजिल अभियान के अन्तर्गत सुल्तान ने खुसरो मलिक के नेतृत्व में एक विशाल सेना को पहाड़ी राज्यों को जीतने के लिए भेजा। उसकी पूरी सेना दुर्गम जंगली रास्तों में भटक गई, इब्न बतूता के अनुसार अन्ततः केवल तीन अधिकारी ही बचकर वापस आ सके। इस तरह मुहम्मद तुगलक की यह योजना भी असफल रही।

मुहम्मद तुगलक के शासन काल में हुए महत्वपूर्ण विद्रोह

प्रथम विद्रोह 1327 में उसके चचेरे भाई बहाउद्दीन ने किया जो कुम्भलगढ़ के निकट सागर का सूबेदार था वह सुल्तान द्वारा पूरी तरह पराजित किया। 1327-28 में सिंध तथा मुल्तान के सूबेदार बहराम आईबा का विद्रोह, 1335 में सैयद जलालुद्दीन हसन द्वारा माबर में किया गया विद्रोह, लाहौर के सूबेदार इमीर हुलाचू का विद्रोह, 1330-31 में बंगाल का विद्रोह जिसे प्रारम्भ में

सुल्तान ने दबा दिया पर 1340-41 के करीब शम्सुद्दीन के नेतृत्व में
बंगाल दिल्ली सल्तनत से हट गया, 1337-38 में कड़ा के सूबेदार निजाम
माई का विद्रोह, 1338-39 में बीदर के सूबेदार नुसरत खाँ का
विद्रोह, 1339-40 में गुलबर्गा के अलीशाह का विद्रोह, अवध के
सूबेदार, आईन-उल-मुल्क मुल्तानी का 1340-41 का विद्रोह आदि
इस तरह के विद्रोहों का सुल्तान ने सफलता पूर्वक दमन
किया। मु० तुगलक के शासन काल में ही दक्षिण में 1336 में
'हरिहर एवं बुक्का' नामक दो भाईयों ने स्वतन्त्र 'विजयनगर'
की स्थापना की। 1347 में महाराष्ट्र में 'अलाउद्दीन बहमन शाह'
ने स्वतन्त्र 'बहमनी राज्य' की स्थापना की। अफ्रीकी यात्री
इब्न बतूता लगभग 1333 में भारत आया। सुल्तान ने इसे
दिल्ली का काजी नियुक्त किया। लगभग 1342 में मु० तुगलक
दिल्ली का काजी नियुक्त किया। लगभग 1342 में मु०
ने इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया। लगभग 1342 में मु०
तुगलक ने इसे अपने राजदूत के रूप में चीन भेजा। इब्नबतूता ने
अपनी पुस्तक 'रेहला' में मु० तुगलक के समय की घटनाओं का वर्णन
किया है।

अपने शासन काल के अन्तिम समय में जब सुल्तान
मु० तुगलक गुजरात में विद्रोह को कुचल कर तागी की समाप्त करने
के लिए सिन्ध की ओर बढ़ा तो मार्ग में थट्टा के निकट गोडाल
पहुँचकर वह गंभीर रूप से बीमार हो गया। यहीं पर सुल्तान की
20 मार्च 1351 को मृत्यु हो गई उसके मरने पर इतिहासकार
बदायूँनी ने कहा कि 'सुल्तान को उसकी प्रजा से और
प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गई।

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)

फिरोजशाह तुगलक मुहम्मद तुगलक का चचेरा भाई एवं सिपहसालार रजब का पुत्र था। इसकी माँ 'बीबी नैला' राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी। मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद 20 मार्च 1351 को फिरोज तुगलक का राज्याभिषेक थट्टा के नजदीक हुआ। पुनः फिरोज का राज्याभिषेक दिल्ली में अगस्त 1351 ई. में हुआ। सुल्तान बनने के बाद फिरोज तुगलक ने दिल्ली सल्तनत से अलग हुए अपने प्रदेशों को पुनः जीतने के अभियान के अन्तर्गत बंगाल एवं सिंध पर आक्रमण किया। बंगाल को जीतने के लिए सुल्तान ने 1353 में आक्रमण किया। उस समय शम्सुद्दीन इलियास वहाँ का शासक था। इसने इकदाला के किले में शरण ले रखी थी, 1355 में वापस दिल्ली आ गया। पुनः बंगाल पर अधिकार करने के प्रयास के अन्तर्गत 1359 फिरोज तुगलक नेपाल के तत्कालीन शासक शम्सुद्दीन के पुत्र सिकन्दरशाह पर आक्रमण किया पर एकबार फिर सुल्तान असफल होकर वापस आ गया।

लगभग 1360 में सुल्तान फिरोज ने 'जाजनगर' (उड़ीसा) पर आक्रमण कर वहाँ के शासक भानुदेव तृतीय को परास्त कर पुरी के जगन्नाथ मंदिर को ध्वस्त किया। 1361 में फिरोज ने नगरकोट पर आक्रमण कर वहाँ के शासक को परास्त कर प्रसिद्ध 'ज्वालामुखी के मंदिर को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया। 1362 में सुल्तान फिरोज ने सिंध पर आक्रमण किया। यहाँ के जाम बाबनियों से लड़ती हुई सुल्तान की सेना लगभग 6 महीने तक रन के रेगिस्तान में फँसी रही, कालान्तर में जाम बाबनियों ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर वार्षिक कर लिया और देने पर सहमत हो गये।

इन साधारण विजयों के अतिरिक्त फिरोज के नाम कोई बड़ी सफलता नहीं जुड़ी। उसने दक्षिण में स्वतन्त्र हुए राज्य विजयनगर बहमनी एवं मदुरा को पुनः जीतने का कोई प्रयास नहीं किया।

गृहनीति (Home policy)

1. राजस्व सुधार (Fiscal reforms)
2. सिंचाई को प्रोत्साहन
3. सार्वजनिक निर्माण कार्य (Public works)
4. न्याय एवं लोकहित के कार्य
5. शिक्षा एवं साहित्य
6. दास प्रथा

7- सेना का प्रबन्ध
8- धार्मिक असहिष्णुता की नीति

राजस्व सुधार- राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत फिरोज ने अपने शासन काल में 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल (4) कर खराज, 'खुम्स', 'जजिया' एवं 'जकात' को वसूल करने का आदेश दिया। उलेमाओं के आदेश पर सुल्तान ने एक नया कर सिंचाई कर भी लगाया, जो उपज का 1/10 भाग वसूला जाता था।

सिंचाई को प्रोत्साहन -> सुल्तान ने सिंचाई की सुविधा के लिए 5 बड़ी नहरें, यमुना नदी से हिसार तक 150 मील लम्बी, सतलज से घग्घर नदी तक 96 मील लम्बी, सिरमौर की पहाड़ी से लेकर हांसी तक, घग्घर से फिरोजाबाद तक एवं, यमुना से फिरोजाबाद तक का निर्माण करवाया।

सार्वजनिक निर्माणकार्य -> सार्वजनिक निर्माण कार्यों के अन्तर्गत सुल्तान ने लगभग 300 नये नगरों की स्थापना की। इनमें से हिसार, फिरोजाबाद (दिल्ली), फतेहाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर आदि प्रमुख थे। इन नगरों में यमुना नदी के किनारे बसाया गया फिरोजाबाद सुल्तान को सर्वाधिक प्रिय था। इसके शासन काल में खिज्राबाद एवं मेरठ से अशोक के दो स्तम्भलेखों को लाकर दिल्ली में स्थापित किया गया। अपने कल्याणकारी कार्यों के अन्तर्गत फिरोज ने एक रोजगार का दफ्तर एवं मुस्लिम अनाथ स्त्रियों, विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता हेतु एक नये दीवान-ए-खैरात नामक विभाग की स्थापना की।

न्याय तथा लोकहित के कार्य -> फिरोज की न्याय-व्यवस्था इस्लाम के नियमों पर आधारित थी। सिंहासन पर बैठने के बाद उसने महसूस किया कि पूर्व सुल्तानों का दण्ड विधान बहुत सख्त है। इसी तरह फिरोज ने उदार दण्ड विधान का निर्माण किया। उसने एक दानशाला (दीवान-ए-खैरात) और खोली दार-उल-शफा- चिकित्सालय को स्थापना की जिसमें रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा के साथ-2 भोजन भी कराया जाता है।

सैन्य नीति :-> फिरोज तुगलक न तो पराक्रमी था और न ही एक सुयोग्य सेनानायक। अतः मु० तु० के शासन काल में दिल्ली से अलग एवं स्वतन्त्र हो जाने वाले राज्यों को जीतने का उसने कोई प्रयास नहीं किया साम्राज्य-विस्तार की उसमें आकांक्षा नहीं थी, लेकिन जब कभी युद्ध सम्बन्धी उसके कर्तव्य की बारी आयी तो उसने युद्ध किये।
बंगाल के विरुद्ध अभियान (1353-54 ई०), बंगाल के विरुद्ध दूसरा अभियान (1359-60 ई०), उड़ीसा पर आक्रमण, कांगड़ा अभियान (136०-61 ई०), सिन्ध तथा विद्रोहों का दमन उसके शासन काल के प्रमुख सैन्य नीति थी।

मूल्यांकन

फिरोज के अन्तिम दिन प्रसन्नतापूर्वक नहीं बीते। 1374 ई० में उसके उत्तराधिकारी पुत्र फतेखां की मृत्यु हो गयी थी, जिससे सुल्तान को भारी आघात पहुँचा। उसकी उम्र भी काफी हो चुकी थी, शोक के कारण शक्ति तथा निर्णय बुद्धि क्षीण होने लगी। 1387 ई० में उसका दूसरा पुत्र खानजहां भी मर गया। अक्टूबर 1388 ई० में 80 वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हो गया।

फिरोज एक पक्का मुस्लिम शासक था तथा इस्लामी कानून का पक्का पाबन्द था। उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।

आधुनिक इतिहासकार इलियट एल्फिंस्टन फिरोज की तुलना अकबर से करते है, लेकिन दूसरी ओर वी. ए. स्मिथ फिरोज की अकबर से तुलना ~~मूर्खता~~ मूर्खतापूर्ण मानते है।

कुल मिलाकर फिरोज न तो उच्चकोटि का आदर्श शासक था और न ही सफल शासक डॉ आर. पी. त्रिपाठी के शब्दों में, "विधाता की कुटिल गति इतिहास के इस दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य से प्रकट हुई कि जिन गुणों ने फिरोज तुगलक को लोकप्रिय बनाया वे ही दिल्ली सल्तनत की दुर्बलता के लिए जिम्मेदार सिद्ध हुए"।

तैमूर का आक्रमण
(Timurs Invasion)

जन्म – ट्रान्स आक्सियाना के केच नामक स्थान पर 1336,
पिता – अमीर तुर्गाई बार्लस कबीले की चगताई शाखा का प्रधान था।
शिक्षा – उसे अच्छी शिक्षा प्राप्त थी तथा युद्ध विद्या की भी दीक्षा दी गयी थी
सिंहासनारोहण → तैंतीस वर्ष की अवस्था में वह समरकन्द के सिंहासन पर बैठा। अपनी महत्वाकांक्षा के कारण उसने फारस, मेसोपोटामिया तथा अफगानिस्तान पर अधिकार कर लिया। उसका साम्राज्य चंगेज़खाँ के समान विस्तृत था, अतः अब उसने भारत पर भी आक्रमण करने का विचार किया।

तैमूर के भारत आक्रमण का उद्देश्य :>

कुछ इतिहासकारों के अनुसार, तैमूर ने अपने पोते की सहायता करने की दृष्टि से भारत पर आक्रमण किया।
मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार, आक्रमण का मुख्य कारण भारत में मूर्ति पूजा का नाश करना था।
डॉ A.L. Srivastava के अनुसार, "वास्तव में हिन्दुस्तान को जीतने और प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उस पर शासन करने की उसकी कोई इच्छा न थी।"

तैमूर का भारत अभियान

मुल्तान पर अधिकार – तैमूर ने भारत प्रस्थान करने से पूर्व अपने पोते पीर मु० को एक विशाल सेना देकर रवाना किया। पीर मुहम्मद ने सिन्धु नदी पार करके उच्च का प्रदेश जीता। 6 महीने पश्चात मुल्तान पर अधिकार कर लिया, इसकी सूचना मिलते ही तैमूर अपनी विशाल सेना सहित 1398 को अप्रैल माह में समरकन्द की ओर चला। अक्टूबर महीने में तालम्बा नामक स्थान को घेरा, नगर को लूटा और वहां के निवासियों को कत्ल करता हुआ दिपालपुर जीतता

हुआ भटनेर पहुँचा।

भटनेर विजय → दिपालपुर के विद्रोहियों को दण्ड देने के उद्देश्य से तैमूर ने भटनेर के दुर्ग को घेर लिया। वहाँ के शासक ने तैमूर का सामना किया, लेकिन उसे पराजित होना। भटनेर में भी तैमूर ने खूब लूटपाट मचायी।

सिरसा तथा कैथल विजय → अब तैमूर ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, मार्ग में उसने सिरसा और कैथल को खूब लूटा। वहाँ पर हजारों हिन्दुओं का वध किया। तथा स्त्रियों एवं बच्चों को कैदकर लिया। अनेक हिन्दू मुसलमान बन गये।

दिल्ली आक्रमण → दिसम्बर के पहले सप्ताह तक तैमूर दिल्ली पहुँच गया। उस समय दिल्ली का सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद था जो बहुत ही निर्बल सुल्तान था। 17 दिसम्बर, 1398 ई० को तैमूर ने दिल्ली पर एक विशाल सेना सहित आक्रमण किया। महमूद पराजित हुआ और वह गुजरात की ओर भाग गया। 18 दिसम्बर, 1398 ई० को तैमूर ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। तैमूर ने धूमधाम से दिल्ली में अपना दरबार लगाया। तैमूर के सैनिकों ने जी भरकर दिल्ली को लूटा। हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया तथा कई हृष्ट पुष्ट युवक युवतियों को अपने साथ दास बनाकर ले गये। तैमूर पन्द्रह दिन तक दिल्ली में रुका। भारत में रहने तथा उस पर शासन करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। अतः 1 जनवरी, 1399 ई० को उसने दिल्ली को छोड़ दिया।

हरिद्वार तथा मेरठ में लूट पाट → दिल्ली से प्रस्थान करने के बाद फिरोजाबाद होता हुआ वह मेरठ पहुँचा। मेरठ को बुरी तरह से लूटा उसे बाद हरिद्वार पहुँचा। हरिद्वार के समीप उसे दो हिन्दू सेनाओं से युद्ध करना पड़ा लेकिन इनको परास्त करते हुए तैमूर आगे बढ़ गया।

जम्मू पर आक्रमण → तैमूर शिवालिक की पहाड़ियों के किनारे-2 बढ़ते हुए कांगड़ा पहुँचा। कांगड़ा से लूट-पाट मचाता हुआ वह जम्मू की ओर बढ़ा। पहाड़ी के राजा को पराजित करके उसने इसनगर को भी खूब लूटा और फिर मुल्तान तथा दिपालपुर का प्रबन्ध अपने एक प्रतिनिधि खिज्रखां को सौंप कर स्वयं अपने देश समरकन्द लौट गया। इस प्रकार वह अपने उद्देश्यों में सफल हुआ।

तैमूर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव

1- जन-धन की हानि
2- हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा
3- तुगलक वंश का पतन
4- भारतीय कला की भारी क्षति
5- भारतीय कला का प्रचार
6- बाबर को भारत आने की प्रेरणा

सैय्यद वंश

खिज्रखां (1414-21 ई०)

दिल्ली सल्तनत पर तैमूर के आक्रमण के बाद खिज्रखाँ ने सैय्यद वंश की स्थापना की। फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में वह मुल्तान का गवर्नर था। तैमूर लंग ने वापस लौटते समय मुल्तान और दीपालपुर की सूबेदारी खिज्र खान को सौंपी थी। इसके कार्यकाल में भी सिक्के तुगलक शासकों के नाम से जारी किये जाते थे। 20 मई, 1421 ई० में खिज्र खान की मृत्यु हो गयी।

मुबारक शाह (1421-34 ई०)

मुबारक शाह सैय्यद वंश का दूसरा शासक था, खिज्र खां की मृत्यु के बाद वह दिल्ली सल्तनत का शासक बना। वह खिज्र खां पुत्र था। यह एक शक्तिशाली व योग्य शासक था, इसने मेवात, जयपुर और ग्वालियर पर विजय प्राप्त की थी। इसने अपने आधिपत्य का विस्तार किया

और विद्रोहियों का सफलतापूर्वक दमन किया। 1434ई० में दरबार में ही इसकी हत्या कर दी गयी थी।

अन्य शासक :->
मुबारक शाह की मृत्यु के बाद अमीरों ने मु० शाह को शासक बनाया, मु० शाह ने 1434ई० से लेकर 1443 ई० तक शासन किया। परन्तु उसकी सत्ता बहुत सीमित थी, वह केवल तीस मील के क्षेत्र पर ही शासन कर सकता था, शेष क्षेत्र पर अमीरों का नियंत्रण था। सैय्यद वंश का अंतिम शासक आलम शाह था, उसने 1443 से लेकर 1451 तक शासन किया।

लोदी वंश

सैय्यद एवं लोदी वंश
(The SAYYID and Lodi DYNASTY)

तुगलक वंश के पतन के पश्चात खिज्र खां ने एक नवीन वंश की स्थापना की जिसको 'सैय्यद वंश' कहा जाता है। इस वंश ने 37 वर्षों तक दिल्ली में शासन किया किन्तु इसका कोई महत्वपूर्ण शासक नहीं हुआ

खिज्र खाँ (1414-1421)

पुत्र- मलिक सुलेमान
(तुं शासन काल, फिरोज तुं के शासनकाल में मुल्तान का सूबेदार)

→ वह तैमूर से मिल गया था क्योंकि तैमूर ने उसे मु०, लाहौर तथा दीपालपुर का सूबेदार नियुक्त किया।

→ 1414 ई० में दिल्ली सल्तनत पर अधिकार कर लिया।
→ इसके शासन काल में अनेक विद्रोह हुए जिनका इसने सफलता पूर्वक दमन किया। इसका सम्पूर्ण शासनकाल पंजाब, खोखरों, जौनपुर, बदायूँ आदि के विद्रोहों का दमन करने में ही व्यतीत हुआ।

मुबारक खां (1421-1434ई०)

→ मुबारक खां - खिज्र खां का पुत्र था।
→ इसका शासन काल विद्रोहों का दमन करने में बीता
→ इसके वजीर सरवर-उल-मुल्क ने षड्यन्त्र करके उसकी हत्या कर दी।

मुहम्मदशाह (1434 1445ई०)

→ मु०शाह - खिज्र खां का नाती था।
→ प्रारम्भ में शासन शक्ति वजीर सरवर-उल-मुल्क के हाथों में थी, किन्तु बाद में सुल्तान ने उसकी हत्या करवाकर के कमाल-उल-मुल्क को अपना वजीर नियुक्त किया।
→ इसके समय में भी विद्रोह होते रहे।
→ लाहौर तथा सरहिन्द के सूबेदारों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया परन्तु सफलता नहीं मिली (बहलोल लोदी)
इन्हीं परिस्थितियों में मु०शाह की मृत्यु हो गयी।

आलमशाह मु० शाह का पुत्र आलमशाह था, शासक बना, वह अत्यन्त अयोग्य था। वह उसके वजीर हमीदखां ने अनबनहोने के कारण वह दिल्ली छोड़कर बदायूँ चला गया, अवसर का लाभ उठाकर बहलोल लोदी ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया परन्तु वजीर हमीद खां ने उसे असफल कर दिया। बाद में वजीर ने ही बहलोल लोदी को दिल्ली आमन्त्रित किया। बहलोल ने दिल्ली आकर सर्वप्रथम वजीर की हत्या करवा दी। और 19 April 1451 ई० को 1451 ई० को स्वयं को सुल्तान घोषित किया। इस प्रकार से सैयदवंश का शासन समाप्त होगया व लोदीवंश की स्थापना हुई।

लोदीवंश (Lodi Dynasty) (1451-1526 ई०)

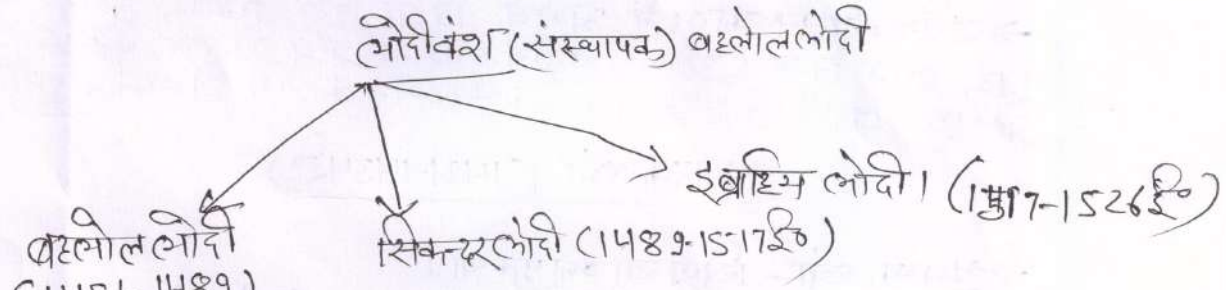

बहलोल लोदी – लोदी वंश का संस्थापक

→ अफगानिस्तान के गिलजाई कबीले का निवासी था
→ उसके पूर्वज सुल्तान में आकर बस गये थे।
→ बहलोल ने दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात् 19 April 1451 ई० में सुल्तान घोषित किया।

उपलब्धियाँ → → योग्य शासक
→ उसने अमीरों को भेंट, पुरस्कार, आदि देकर विश्वास में लिया और इस प्रकार केन्द्र में अपनी सत्ता को संगठित करने के पश्चात् उसने विद्रोही सामन्तों का दमन भी किया।

विद्रोहों का दमन :-

→ मेवात के सूबेदार अहमदखाँ मेवाती पर आक्रमण किया अहमद खां ने आत्म समर्पण कर दिया। तथा सुल्तान ने उसके 6 जिलों पर अधिकार कर लिया।
→ सम्भल के सूबेदार दरियाखां पर आक्रमण किया, सूबेदार ने आत्मसमर्पण कर दिया
→ कोइल के ईसा खां सकीत के मुबारकखाँ तथा मैनपुरी के राजा प्रतापसिंह को परास्त कर अपना सामन्त नियुक्त किया।
→ रेवाड़ी के सूबेदार कुतुबखां पर भी विजय प्राप्त की।
→ अहमद यादगार के अनुसार उसने चित्तौड़ के राणा को भी परास्त किया था किन्तु यह सत्य प्रतीत नहीं होता। बहलोल की एक प्रमुख सफलता जौनपुर के राजा हुसैन पर विजय प्राप्त करना थी। इस विजय से बहलोल की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। उसका अन्तिम अभियान ग्वालियर पर आक्रमण था। ग्वालियर का राजा परास्त हुआ व बहलोल को उससे अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई। ग्वालियर से लौटते समय उसकी बीमारी से मृत्यु हो गयी।

मूल्यांकन, वह योग्य शासक, राजनीतिज्ञ, पराक्रमी शासक था। वह यथार्थवादी था तथा अवसर के अनुसार नीति निर्धारित करता था उसकी प्रशंसा करते हुए डॉ A.L. Srivastava ने लिखा है।

" बहलोल एक वीर तथा निर्भीक योद्धा और सफल सेनानायक था। उसमें सामान्य बुद्धि, यथार्थवादिता और बुद्धिमत्ता पर्याप्त मात्रा में थी, इसलिए उसने अपने समय की सम्भावनाओं को भली-भाँति समझा और अपनी योग्यता तथा साधनों के अनुरूप कार्य करने का संकल्प किया"।

सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई०)

वहलोदी

बारबकशाह — निज़ाम खाँ → सुनारिन का पुत्र था

(जौनपुर का सूबेदार)

(सफलता मिली, 17 जुलाई 1489 ई० को सिकन्दरशाह के नाम से गद्दी पर बैठा)

→ वह योग्य शासक था, अतः गद्दी पर बैठने के पश्चात् विरासत में प्राप्त विशाल साम्राज्य को संगठित और शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया।

प्रारम्भिक समस्याएं :→ उसका बड़ा भाई बारबकशाह, उसके विद्रोह का दमन किया तथा अनेक राज्य भी स्वतन्त्रता की घोषणा करना का प्रयत्न कर रहे थे, उनको को रोकने का सफल प्रयास किया

→ रिक्त राजकोष

गृहनीति (Home Policy)

(1.) विद्रोहों का दमन → सर्वप्रथम अपने चाचा आलम खाँ, जो रोपड़ी व चन्दावर का सूबेदार था, पर आक्रमण कर दिया क्योंकि उसका चाचा शासक बनने का स्वप्न देख रहा था, वह भागकर अपने चचेरे भाई ईसाखां के यहां शरण ली। ईसाखां भी सिकन्दर का विरोधी था। सिकन्दर ने कूटनीति का पालन करते हुए आलमखां से मित्रता करली और उसे इटावा का सूबेदार बना दिया। तत्पश्चात सिकन्दर ने ईसाखां पर आक्रमण किया व उसे परास्त किया। सिकन्दर ने अपने चचेरे भाई व कालपी के सूबेदार हुमायूं पर भी आक्रमण कर उसे पराजित किया। अन्त में उसने तातारखाँ को भी पराजित किया। इस प्रकार उसने अपने प्रतिद्वन्दियों और विरोधियों का दमन कर सिकन्दर लोदी ने न केवल शासन को सुदृढ़ता प्रदान की बल्कि अपने चुनाव को भी उचित ठहराया।

जौनपुर के विद्रोहों का दमन

जौनपुर के सूबेदार बारबकशाह के विद्रोह का सफलता पूर्वक दमन किया परन्तु उदारता की नीति अपनाते हुए उसने अपने भाई बारबक को पुनः जौनपुर का सूबेदार नियुक्त किया। साथ ही बारबक पर नजर रखने के लिए गुप्तचर रखे। कालान्तर में कुछ अमीरों ने हुसैनशाह के नेतृत्व में विद्रोह किया, जिसे बारबक दबा न सका और विवश होकर भागने लगा। सिकन्दर ने इस विद्रोह का दमन किया और पुनः बारबक को सूबेदार (जौनपुर) नियुक्त किया किन्तु कुछ समय पश्चात् जौनपुर में हिन्दू सरदारों ने विद्रोह कर दिया। बारबक पुनः भाग गया। सिकन्दर ने इस विद्रोह का दमन किया और बारबक की अयोग्यता से नाराज होकर उसे बन्दी बना लिया

अमीरों पर कठोरता :->

-> अमीरों को अनुशासनप्रिय बनाना चाहता था अतः उसने गुप्तचरों की सहायता ली

धार्मिक नीति (~~Regi~~ Religious Policy)

-> सिकन्दर लोदी कट्टर मुसलमान था

-> उसने अलाउद्दीन तथा फिरोज तुगलक की भाँति हिन्दुओं पर कठोर नीति अपनायी।

-> एक हिन्दू को यह कहने पर मृत्युदण्ड दिया कि हिन्दू धर्म इस्लाम की समान हो सकता है।

-> अनेक मन्दिरों को तोड़वा कर मस्जिदों का निर्माण करवाया

-> हिन्दू देवी, देवताओं की मूर्तियों के टुकड़े कसाइयों को वितरित किए।

-> उसने थानेश्वर के पवित्र तालाब में हिन्दुओं के स्नान पर रोक लगा दी।

-> हिन्दुओं की दाढ़ी बनाने से नाइयों को रोका

-> हिन्दुओं पर अत्यन्त कठोर कर लगाये

-> अनेक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया

साम्राज्यवादी नीति (Imperial policy)

सिकन्दर लोदी अत्यन्त महत्वाकांक्षी था अतः अपनी स्थिति सुदृढ़ करनेके उपरान्त उसने अपने साम्राज्य का विस्तार करने का प्रयास किया

(1) बिहार पर विजय :-> बिहार में उस समय हुसैनशाह रह रहा था, जो समय-2पर जौनपुर में सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह करवाता था। अतः सिकन्दर हुसैनशाह की शक्ति का दमन करना चाहता था।1494 ई० में सिकन्दर ने विद्रोहियों के नेता फाफामऊ (इलाहाबाद के समीप) के भील राजा पर आक्रमण किया, किन्तु इस युद्ध में उसे भारी क्षति उठानी पड़ी। इस अवसर से लाभ उठाते हुए हुसैनशाह ने एक शक्तिशाली सेना के बिहार से प्रस्थान किया, किन्तु सिकन्दर ने आगे बढ़ते हुए बनारस के समीप उनका सामना किया व हुसैनशाह को पराजित किया हुसैनशाह पराजित होकर बिहार भागा, किन्तु सिकन्दर ने उसका पीछा किया व बिहार के विशाल भू-भाग पर अधिकार कर लिया। बिहार के अभियान के समय ही उसने तिरहुत पर भी आक्रमण किया व विजय प्राप्त कर वहाँ के राजा को कर देने के लिए विवश किया।

बंगाल से सन्धि :- बंगाल में अलाउद्दीन शासन कर रहा था। बिहार के हुसैनशाह को वह अपना सुबेदार मानता था। अतः बिहार पर सिकन्दर की विजय की खबर से वह अत्यन्त क्रोधित हुआ व अपने पुत्र दानियाल को सिकन्दर के आगे बढ़ने से रोकने के लिए भेजा। दोनो पक्षों में युद्ध से पहले ही समझौता हो गया। दोनों ने एक दूसरे के विरोधियों को शरण न देने का वचन दिया। इस प्रकार सिकन्दर के राज्य की सीमाएं बंगाल तक विस्तृत हो गयी।

(3) अन्य विजयें सिकन्दर ने अपने साम्राज्य विस्तार हेतु धौलपुर पर आक्रमण किया। धौलपुर का राजा विनायकदेव था। विनायकदेव ने सिकन्दर से जमकर संघर्ष किया किन्तु अन्ततः 1502 ई० में सिकन्दर का धौलपुर पर अधिकार हो गया। तत्पश्चात् उसने ग्वालियर पर अधिकार करने का प्रयत्न किया व इसी उद्देश्य से सभी प्रयत्न विफल हो गये, किन्तु ग्वालियर के समीप के क्षेत्रों (चन्देरी, नरवर आदि)

पर उसका अधिकार हो गया। ग्वालियर वह अन्त तक न जीत सका। सिकन्दर ने नागौर पर भी आक्रमण किया। नागौर के शासक मुहम्मदखाँ ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

इसप्रकार अनेक विजयों के द्वारा उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। 21 नवम्बर, 1517 ई० को उसकी मृत्यु हो गयी।

मूल्यांकन → सिकन्दर लोदी एक योग्य एवं पराक्रमी शासक था। उसने दिल्ली सल्तनत का संगठित किया व सुल्तान के पद के सम्मान में उसने वृद्धि की। अपनी कुशल नीतियों से उसने राज्य की समस्याओं का सुलझाया।

इब्राहीम लोदी (1517 से 1526)

सिकन्दर के मरने के बाद अमीरों ने आमसहमति से इसके पुत्र इब्राहिम को 21 नवम्बर, 1517 को इब्राहीम शाह की उपाधि से आगरा के सिंहासन पर बैठाया। सिंहासन पर बैठने के उपरान्त इब्राहीम ने आजम हुमायूँ शेरवानी को ग्वालियर पर आक्रमण करने हेतु भेजा। पटना के तत्कालीन शासक विक्रमाजीत सिंह से इब्राहिम को अधीनता स्वीकार कर ली। मेवाड़ के शासक राणा सांगा के विरुद्ध इब्राहीम का अभियान असफल रहा। राणा सांगा ने चन्देरी पर अधिकार कर लिया। इब्राहीम के भाई जलाल खाँ ने जौनपुर को अपने अधिकार में कर लिया था। इसने कालपी में जलालुद्दीन की उपाधि के साथ अपना राज्याभिषेक करवाया था। इब्राहीम लोदी ने लोहानी, फारमूली एवं लोदी जातियों के दमन का पूर्ण प्रयास किया जिससे शक्तिशाली सरदार असंतुष्ट हो गये। असंतुष्ट सरदारों ने पंजाब का शासक 'दौलत खां लोदी' एवं इब्राहिम लोदी के चाचा 'आलम खाँ' ने काबुल के तैमूरवंशी शासक बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण दिया। बाबर ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वह भारत आया। 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के मैदान में इब्राहिम लोदी एवं बाबर के मध्य हुए भयानक संघर्ष में लोदी की दुर्भाग्यपूर्ण हार हुई, अन्तः उसकी हत्या कर दी गई। इब्राहीम की मृत्यु के साथ ही दिल्ली सल्तनत काल समाप्त हो गया। बाबर ने भारत में एक नवीन 'मुगल वंश' की स्थापना की।